शाबाश बेटा

शिवकुमार गाँधी

जब भी मैं रामेश्वर बरूटा का बनाया यह चित्र "शाबाश बेटा"' देखता हूँ तो मुझे लगता है कि बहुत सारे लोगों खासतौर से बच्चों को मशीन की तरह काम करने पर मजबूर किया जाता है। मुझे लगता है बचपन की विडम्बना को बेहद सटीक तरीके से कहता है। इसमें बड़ों व बच्चों के रिश्तों को बखूबी दर्शाया गया है।

तुम जानना चाहोगे कैसे?

चित्र में हमें एक सफेद हिस्सा दिखता है। सर्कस या मंच पर करतब करने वाले कलाकार पर रोशनी पड़ रही है। सफेद चमकीली

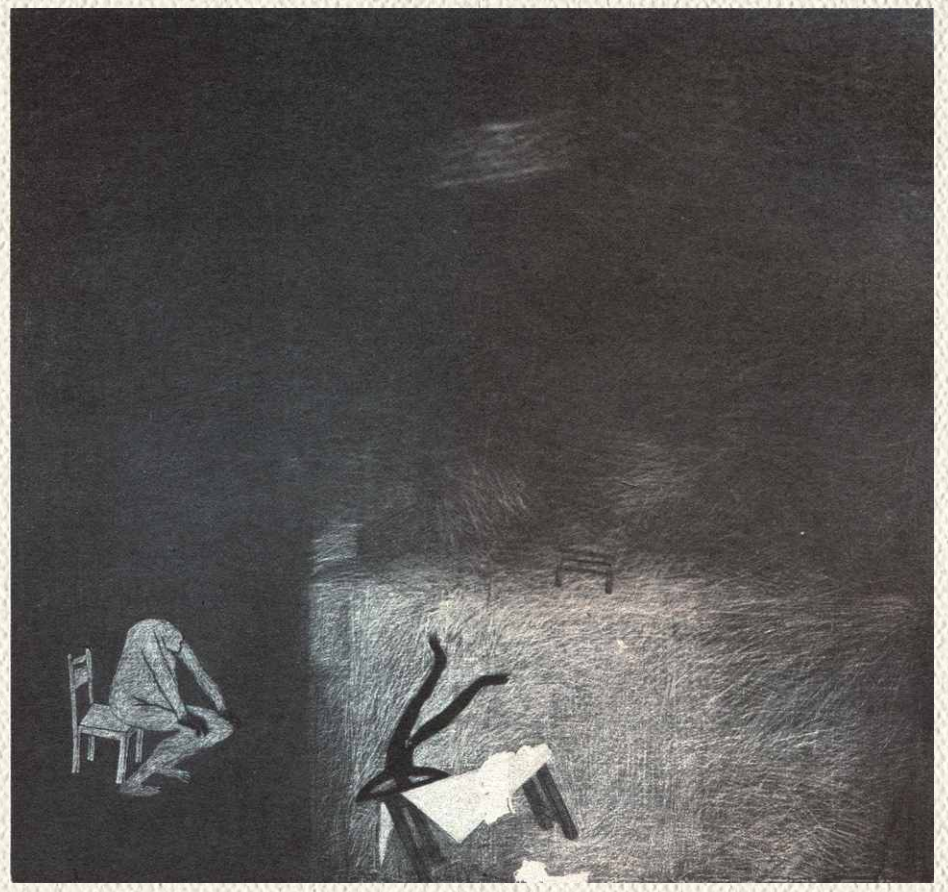

लाइट वाले हिस्से में एक मेज़ है। वह एक तरफ झुकी हुई रखी है। उस पर एक सफेद चादर बिछी है – किसी कफन जैसे। इसी मेज़ पर एक बच्चा सिर के बल खड़ा अपना सन्तुलन बनाए रखने की कोशिश कर रहा है। जिस तरफ मेज़ झुकी है उसका शरीर भी उसी तरफ झुक रहा है। यानी सन्तुलन बनाना अब बेहद मुश्किल हो चुका है।

पास ही एक व्यक्ति कुर्सी पर बैठा है। वह बच्चे की ओर देख रहा है। उसे देखकर लगता है कि वही बच्चे को सन्तुलन बनाए रखने के लिए प्रेरित कर रहा है। और बोल रहा है – "शाबाश बेटा।"

लेकिन चित्र का बड़ा हिस्सा अँधेरे में डूबा हुआ है। उदासी का माहौल है। यानी बच्चे और बड़े व्यक्ति के बीच की गतिविधि आनन्ददायक नहीं है।

कुर्सी पर बैठा यह व्यक्ति पिता, अध्यापक आदि कोई भी हो सकता है। एक ऐसा व्यक्ति जो अपने इशारों पर काम कराता है। उसके शरीर को देखो। भारी भरकम कठोर-सा दिखने वाला शरीर। गहरे काले हाथ कड़े अनुशासन और सज़ा की आशंका की याद दिलाते हैं। एक मासूम बच्चा अपने पसन्द के जाने कितने काम छोड़कर किसी आदेश के पालन में लगा है।

यह चित्र रामेश्वर बरूटा ने कैनवास पर तैल रंगों से बनाया है। उन्होंने पहले कैनवास पर सिल्वर रंग का लेप किया। फिर उसके ऊपर काले रंग को लगाया। सूखने के बाद जब पूरा कैनवास काला दिख रहा था उस पर ब्लेड से खुरचकर आकृति उभारी। वे अकसर इसी तकनीक से चित्र रचते हैं।

आपको रामेश्वर बरूटा की फिल्म "शाबाश बेटा" के बारे में भी बताता चलूँ।

अपनी एकेडमी के मैदान में एक पुलिस कर्मचारी बीच में खड़ा है। उसके हाथ में घोड़े की लगाम है। और घोड़ा कर्मचारी के चारों ओर धीरे-धीरे चक्कर लगा रहा है। धीरे-धीरे कर्मचारी घोड़े को तेज़ और तेज़ दौड़ने के लिए प्रेरित कर रहा है। और घोड़ा तेज़ी से चक्कर लगा रहा है। सिर्फ घोड़े की टापों की ध्वनि आ रही है। यह ध्वनि घोड़े की गति के साथ बढ़ती चली जाती है। और जब घोड़ा अपनी अधिकतम गति पर है तभी पीछे से एक तेज़ आवाज़ आती है – शाबाश बेटा।

रामेश्वर बरूटा चित्रकार तो हैं ही उन्होंने कई सार्थक फिल्में भी बनाई हैं। यह चित्र 1979 में बनाया था।